MAT-16070201010300 **Seat No.** ________

B. R. S. (Sem. I) (CBCS) Examination

October / November – 2016

Hindi Foundation – II

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सभी प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए ।

१ कहानी कला के तत्त्वों के आधार पर 'कफन' कहानी का मूल्यांकन कीजिए । १५

अथवा

१ 'दिल्ली में एक मौत' कहानी का कथासार अपने शब्दों में लिखिए । १५

२ निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए : १५

(अ) निम्नांकित में से किन्हीं **सात** कहावतों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(१) अधजल गगरी छलकन जाए ।

(२) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता ।

(३) आम के आम गुटली के दाम ।

(४) खोदा पहाड़ निकला चुहा ।

(५) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का ।

(६) न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसूरी ।

(७) चोर की दाढ़ी में तिनका ।

(८) जैसी करनी वैसी भरनी ।

(९) हाथी के दाँत खाने और दिखाने के और ।

(१०) अक्ल बड़ी या भैंस ।

(ब) "दोपहर का भोजन" कहानी का संक्षिप्त कथासार अपने शब्दों में लिखिए ।

३ निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए । १५

(१) ''लड़की भाग गयी । लड़के ने घर की राह ली । रास्ते में एक लड़के को मोरी में धकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन–भर की कमाई खोयी, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उँडेल दिया । सामने नहा कर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अन्धे की उपाधि पायी । तब कहीं घर पहुँचा ।''

(२) ''पहले विचार था कि कभी–कभी इस दीप–स्तम्भ पर से आलोक जलाकर अपने पिता की समाधि का इस जल में अन्वेषण करुँगी । किन्तु देखती हूँ, मुझे भी इसी में जलना होगा, जैसे आकाश–दीप ।''

(३) ''जिस समाज में रात–दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे ।''

(४) ''अतुल भवानी और सरदारजी भी लिंक रोड बस–स्टाप की ओर बढ़ गये है और मैं खड़ा सोच रहा हूं कि अगर मैं भी तैयार होकर आया होता तो यहीं से सीधा काम पर निकल जाता ।''

(५) ''मैंने सोचा था कि बरसों तुम सबसे अलग रहने के बाद अवकाश पाकर परिवार के साथ रहूँगा । खैर, परसों जाना है । तुम भी चलोगी ? मैं ? पत्नी ने सकपकाकर कहा, मैं चलूँगी तो यहाँ का क्या होगा ? इतनी बड़ी गृहस्थी फिर सयानी लड़की ..... ।''

४ 'वापसी' कहानी के कथानक की विस्तृत चर्चा कीजिए । १५

अथवा

४ प्रेमचन्द के जीवन–कवन पर प्रकाश डालिए । १५

५ निम्नांकित काव्य पंक्ति का पल्लवन कीजिए : १०

''मुखिया मुख सो चाहिए, खानपान को एक
पालहि पोषइ सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ।''

अथवा

निम्नांकित परिच्छेद का सारांश लिखिए :

''कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक सामान्य भावभूमि पर ले जाती है । जहाँ जगत की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है । इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता, वह अपनी सत्ता को लोक सत्ता में लीन किए रहता है उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती हैं, इस अनुभूति योग के अभ्यास से हमारे मनोविकारों का परिष्कार तथा रोष स्थिति के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है, जिस प्रकार जगत अनेक रूपात्मक है, उसी प्रकार हमारा हदय भी अनेक भावात्मक है, इन अनेक भावों का व्यायाम और परिष्कार तभी समझा जा सकता है, जबकि इन सबका प्राकृत सामंजस्य जगत के भिन्न–भिन्न रूपों, व्यापारों या तथ्यों के साथ हो जाए। इन्हीं भावों के सूत्र में मनुष्य जाति जगत् के साथ तादात्म्य का अनुभव चिरकाल से करती आई है, जिन रूपों और व्यापारों से मनुष्य आदिम युग से ही परिचित है, जिन रूपों और व्यापारों को सामने पाकर वह नर जीवन के आरम्भ से ही लुब्ध और क्षुब्ध होता चला आ रहा है । उसका हमारे भावों के साथ मूल या सीधा सम्बन्ध है, अतः काव्य के प्रयोजन के लिए हम उन्हें मूल रूप और मूल व्यापार कह सकते हैं, इस विशाल विश्व के प्रत्यक्ष से और गूढ़ तथ्यों को भावों के विषय या आलम्बन बनाने के लिए इन्हीं मूल मार्मिक रूपों में नहीं लाए जाते, तब तक उन पर काव्य दृष्टि नहीं पड़ती ।''